Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 2, FEB - 2022 Publication Date: 28/02/2022

DOIs:10.2018/SS/202202008 --:-- Research Article

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के महिलाओं का योगदान

कु.अर्चना बौद्ध, शोधार्थी

डॉक्टर शम्पा चौबे, शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष

शासकीय दूधाधारी बजरंग स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

Email - archana1992baudh@gmail.com

शोध सारांश : भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ की महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। छत्तीसगढ़ में गांधीवादी आंदोलन से पूर्व आदिवासी क्षेत्रों में विभिन्न आंदोलनों में महिलाएं सक्रिय रही लेकिन छत्तीसगढ़ में गांधी जी के आगमन के पश्चात महिलाएं आंदोलन में अग्रिम पंक्ति में अधिक संख्या में खड़ी रही। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाओं द्वारा स्वदेशी, मद्यनिषेध, जंगल सत्याग्रह, नमक कानून, चरखा एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती रही।

मुख्य बिंदु : स्वतंत्रता संग्राम, छत्तीसगढ़, महिलाएं, असहयोग, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो, जंगल सत्याग्रह, योगदान।

1. प्रस्तावना - ,"अगर अहिंसा हमारे जीवन का ध्यान मंत्र है, तो कहना होगा कि देश का भविष्य स्त्रियों के हाथ में है।" महात्मा गांधी के उक्त विचार स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को परिलक्षित करता है। जिसने सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए अग्रणी भूमिका निभाया।[1]

2. शोध उद्देश्य-

1. स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं के योगदान को सामने लाना।
2. अग्रिम पंक्ति के महिलाओं के अलावा प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग किए महिलाओं को सम्मान दिलाना।
3. दुर्गम एवं वनीय क्षेत्रों की महिलाओं की भूमिका को सामने लाना।

3. शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया गया है-

1. ग्रंथा लाइव में उपलब्ध शोध प्रबंधों, ग्रंथों, गजटयरों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्रियों का अन्वेषण
2. स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित स्थलों का अवलोकन
3. स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित जानकार व्यक्तियों से साक्षात्कार

स्वतंत्रता के प्रथम समर में ही महिलाओं का नेतृत्व प्रभावशाली रहा, सन 1824 में कर्नाटक बेलगाम की रानी किट्टूर चेन्नम्मा द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह किया गया।[2] 1857 की क्रांति में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में सेनापति झलकारी बाई के साथ महिला सैनिकों का कर्तव्य महत्वपूर्ण रहा है।[3] प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी रामगढ़ की रानी अवंतीबाई रेवा अंचल में स्वतंत्रता आंदोलन की सूत्रधार थी, जिन्होंने खैरी के युद्ध में अंग्रेजो को धूल चटा दी।[4] उसी प्रकार लखनऊ की बेगम हजरत महल ने वीरता से अंग्रेजों का सामना किया, उन्होंने अंग्रेजों से क्षमा मांगने से इनकार कर दिया।[5]

भारत में राष्ट्रवाद के विकास के साथ गांधीवादी आंदोलन का सूत्रपात हुआ, जिसमें गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को भारत की आजादी के लिए एकजुट किया। प्रत्येक आंदोलन में महिलाओं को अग्रिम पंक्ति में खड़ा किया। महिलाओं का कार्य खादी का प्रचार कर स्वदेशी को बढ़ावा देना, सुधार कार्यक्रम, आर्थिक सहायता कार्यक्रम एवं मध्य निषेध आंदोलन को सफल बनाना था।[6] सन 1921 के कांग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम महिलाओं ने भाग लिया, जिसमें 141 महिलाएं थी। इन महिलाओं ने "राष्ट्रीय स्त्री सभा" का

गठन किया, इसी संगठन की महिलाओं ने खादी प्रदर्शनी का आयोजन किया एवं 1921 में "प्रिंस ऑफ वेल्स" की भारत यात्रा का विरोध किया। असहयोग आंदोलन के समय 12 साल की इंदिरा नेहरू के नेतृत्व में छोटे बच्चियां भी 6000 की संख्या में वानर सेना मैं सम्मिलित हुए। वानर सेना सत्याग्राहीयों के लिए राशन एकत्रण करते एवं बुलेटिन बांटते, छापों और गिरफ्तारियों का समाचार लाते थे।[7]

गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाओं का प्रभाव अधिक रहा। जिसमें दांडी में महिलाओं द्वारा नमक बनाकर बेचना, जिसमें एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू और किसान महिलाओं का नेतृत्वकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय का नाम प्रमुख है। इस दौरान पुलिस की बर्बरता का सामना भी करना पड़ा, जिसमें मुंबई के धरसना तट में सरोजिनी नायडू एवं सहयोगी महिलाओं को गिरफ्तार किया जाना स्मरणीय है।[8] इस कारण यहां 1931 में जेल जाने वाली महिलाओं की संख्या 17000 रहा। नेहरु जी ने कहा नैनी जेल में जब आंदोलन में महिलाओं को अपनी भूमिका निभाने का मौका मिला, तो सभी बंदी सत्याग्रही रोमांचित हो उठे और उनका हृदय भारतीय स्त्रियों के प्रति गर्व से भर उठा। जब जेलें स्त्रियों से भर गया तो उन महिलाओं को जंगलों में अकेले छोड़ आते थे। उन्हें डराया - धमकाया जाता था, फिर भी इन कष्टों को हंसकर सहा इस दौरान विभिन्न महिला संगठनों का योगदान भी सराहनीय रहा, जिसमें "नारी सत्याग्रह समिति" "महिला राष्ट्रीय संघ" "स्त्री स्वराज संघ" " लेडीस स्केटिंग बोर्ड" का कार्य प्रमुख था।[9]

इस आंदोलन में छात्राओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। अतः गांधी जी ने महिलाओं को एक नया आत्मसम्मान एक नया विश्वास एवं आत्म छवि दिलाई। जिसे निष्क्रिय वस्तु समझा गया, वह सक्रिय नागरिक एवं सुधारक बन गई। गांधी जी ने कहा, कि पुरुषों की नजरों में महिलाएं कमजोर नहीं है, क्योंकि वह त्याग, खामोश, पीड़ा, नम्रता, विश्वास और ज्ञान की साक्षात प्रतिमा है। स्त्रियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए बहुत कष्ट सहा, उन्हें आर्थिक कष्ट सहना एवं परिवार से दूर रहना पड़ा और उनके अस्मिता पर हमले हुए एवं शारीरिक और मानसिक पीड़ा सहना पड़ा। महिलाओं के जेल की प्रताड़ना के संबंध में कमलादेवी लिखती है, जेलों में केवल 3 महीना के बच्चों को साथ में रहने दिया जाता था, कर ना चुकाने वाले क्षेत्रों में महिलाओं को इसकी भी अनुमति नहीं थी। जेल के सी श्रेणी में उन्हें रखा जाता था, हर प्रकार की तकलीफें दी जाती थी, घर पर पति एवं बच्चों की बीमारी की स्थिति में भी माफ नहीं करते थे, ना ही घर वापस आने देते थे कई महिलाओं ने जेल की कालकोठरी ओं में ही बच्चों को पैदा किया।[10]

4. छत्तीसगढ़ की स्वतंत्रता सेनानी महिलाएं-

स्वतंत्रता की लहर छत्तीसगढ़ अंचल के गांव तक फैल गया था। 1795 में भोपालपत्तनम में ब्रिटिश यात्री कैप्टन जे. टी. ब्लंट का विरोध किया एवं उन्हे पलायन के लिए मजबूर किया गया।[11] सोनाखान जैसे वन्य क्षेत्रों से आजादी का बिगुल फूंक चूका था 1857 की क्रांति से पहले बस्तर क्षेत्र में ब्रिटिश के खिलाफ विद्रोह हुआ था। सन् 1857 के विद्रोह में शहीद वीर नारायण सिंह एवं सुरेंद्र शाह ने अंग्रेजों एवं उनके समर्थक जमीदार के खिलाफ विद्रोह किया।[12]

छत्तीसगढ़ में गांधी जी के आगमन से पूर्व महिलाओं की सक्रियता ज्यादा दिखाई देती है, परंतु 1910 के भूमकाल विद्रोह में रानी सुबरन कुमार ने गुंडाधुर एवं लाल कालेंद्र सिंह के साथ मिलकर बस्तर अंचल में विद्रोह का बिगुल फूंका। पूरा बस्तर शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। 1 फरवरी 1910 को संपूर्ण बस्तर विद्रोह के आग में भड़क उठा, रानी सुबरन कुंवर ने क्रांतिकारियों की सभा में मुरिया राज की स्थापना एवं ब्रिटिश राज की समाप्ति की घोषणा कर दी। अतः 115 आदिवासियों द्वारा अंग्रेज अधीन छात्रों पर कब्जा करने के लिए पूरी ताकत झोंक दी। रानी ने लोगों को संबोधित किया, कि आप लोग अंग्रेजों के प्रतीक दीवान के खिलाफ तत्काल संघर्ष छेड़ दें, जो बस्तर के दुश्मन हैं और बस्तर को घुन समान चाट रहे हैं। इन अत्याचारी कर्मचारी, अधिकारियों के संरक्षक अंग्रेजी राज को खत्म कर दें।[13] जगदलपुर में रानी के आवास पर 5 मार्च 1910 को छापा पड़ा।रानी सुबरन कुंवर को गिरफ्तार कर रायपुर जेल में डाल दिया गया। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया। इस प्रकार वनांचल क्षेत्रों में ब्रिटिश राज एवं उनके समर्थक शासक के खिलाफ सशस्त्र क्रांति का होना पूरे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध जनाक्रोश को दर्शाता है।[14]

5. असहयोग आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाएं-

प्रथम विश्वयुद्ध से उपजी असंतोष, तुर्की के खलीफा के अपमान, रौलट एक्ट एवं जलियांवाला बाग नरसंहार ने सभी संप्रदायों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एकजुट कर दिया। असंतोष जनता ने असहयोग आंदोलन में भारी संख्या में भागीदारी की। सन 1920 में धमतरी में कंडेल नहर सत्याग्रह हो गया। जिसमें आदिवासी महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही। इस क्षेत्र के आदिवासी, अधिकारियों से सर्वाधिक पीड़ित होने के कारण ब्रिटिश सरकार का विरोध करने लगे। उनके अधिकारियों के मकान लूट लिए गए, उनको धोबी, नाई, रसोईया मिलना बंद हो गया। अतः उस अंचल से बेगारी प्रथा बंद हुआ, गांधी जी ने धमतरी के इमामबाड़े में महिलाओं की जनसभा को संबोधित किया।15 उनसे तिलक - स्वराज फंड के लिए राशि दान देने की अपील की। गांधीजी महिलाओं से अपील करते थे - "स्त्रियों को

अपनी मर्जी से आत्म शुद्धि के साथ आंदोलन के लिए गहना दान कर देना चाहिए, क्योंकि इतनी सारी पूंजी को रोके रखना हानिकारक है, गहने उन्हें गुलाम बना देते हैं, जैसे - जो कैदी अपनी जंजीरों को आभूषण समझ कर प्यार करते हैं, जैसा कि कई लड़कियां और सयानी स्त्रियां तक अपने सोने - चांदी की जंजीरों से तुलना अंगूठियों से करते हैं, उनके बंधन काटना मुश्किल है।"[16]

बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव का घर इन महिलाओं का प्रमुख केंद्र था, ये महिलाएं घर-घर जाकर खादी एवं स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार करती थी। धमतरी के आसपास के वृद्ध महिलाएं बाल्यावस्था से ही सूट कातना सीख कर अब प्रशिक्षिका का काम करती थी। बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव की बहन मनोबाई आंदोलन के सामने झंडा पकड़कर चलती थी तथा नत्थू जी जगताप की पत्नी लीला बाई भी सक्रिय थी। आदिवासी महिला डारन बाई गोंड पुरुषों से कंधे से कंधे मिलाकर चलती थी। कुछ महिलाएं गृह कार्य को पूरा करने के बाद आंदोलन में सहयोग करती थी। साथ ही आदिवासी महिलाएं जंगल सत्याग्रह एवं कृषक आंदोलनों में बड़ी संख्या में भाग लिया।[17]

रायपुर में आंदोलन का प्रभाव जोरों पर था, यहां स्वदेशी का प्रचार तेजी से हो रहा था। 8 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 1921 तक खादी सप्ताह का आयोजन रावणभाठा मैदान में हुआ। विशाल खादी प्रदर्शनी 11 से 13 अक्टूबर को श्रीमती अंजुमन बानो बेगम के नेतृत्व में 200 महिला स्वयं सेविकाओं ने भाग लिया। 3 दिन केवल महिलाओं के लिए प्रदर्शनी था, इतने विशाल जनसंख्या में महिलाओं का घर के चारदीवारी से बाहर निकलना परिवर्तन का संकेत था।[18]

प्रदर्शनी में सूत कातने का प्रतियोगिता भी आयोजित हुआ, इसमें भी छत्तीसगढ़ की महिलाओं ने प्रदर्शन किया एवं धरना दिया एवं चरखा कार्यक्रम में भाग लेकर असहयोग आंदोलन को सफल बनाया। खादी का प्रचार करने के लिए खादी आश्रम खोले, घर में चरखा चलाकर खादी बनाया। गरीबों को 460 चरखा निशुल्क वितरण किये गए।[19]

तिलक - स्वराज फंड के लिए 20 दिसंबर 1920 को गांधी चौक में विशाल सभा को संबोधित कर गांधी जी ने महिलाओं से दान की अपील की। महिलाओं ने खुले मन से गहनों एवं रुपयों की थैली गांधीजी को भेंट किया। मद्य निषेध एवं सुधार कार्यक्रम में महिलाओं ने अधिक संख्या में भागीदारी की। पुरानी बस्ती का जैतुसाव मठ सत्याग्रह का प्रमुख केंद्र था। जैतुसाव मठ से जुड़ी हुई पार्वतीबाई, अंजनीबाई, रजनीबाई, जानकीबाई आदि प्रमुख महिलाएं थी। यहां अनेक अवसर पर महिलाएं एकत्रित होकर देश की आजादी के लिए चिंतन - मंथन करती थी। बुढ़ापारा में वामन राव लाखे का बड़ा भी सत्याग्रह का प्रमुख केंद्र था। यहां रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी शुक्ल नेतृत्वकर्ता थी। कमासीपारा के लक्ष्मीनारायण मंदिर भी था, जिसका नेतृत्व रुकमणीबाई तिवारी करती थी। तात्यापारा में राधाबाई का मकान भी सत्याग्रहियों का केंद्र था।[20]

6. सविनय अवज्ञा आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाएं-

जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्षता में सन 1929 में लाहौर कांग्रेस में पूर्ण - स्वराज एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रस्ताव पास किया गया। गांधी जी ने धरना, बहिष्कार एवं नमक कानून तोड़ने का आह्वान किया। मध्यप्रांत एवं बरार प्रांत में वन कानून 1927 के द्वारा आदिवासियों का शोषण किए जाने के कारण वन कानूनों के उल्लंघन का प्रस्ताव पारित कराया गया। धरना, बहिष्कार, मद्यनिषेध एवं नमक कानून उल्लंघन का कार्यक्रम ज्यादातर शहरी क्षेत्रों में हुआ, जिसमें महिलाओं ने अधिक संख्या में भाग लिया।जबकि जंगल कानूनों का उल्लंघन वनीय क्षेत्रों में किया गया, जहां इन क्षेत्रों की महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

मध्य प्रांत में वन कानून का कठोरता से पालन कराया जा रहा था। जंगलों में मवेशियों के घुस जाने से शासकीय अधिकारियों द्वारा गांव वालों को प्रताड़ित किया जाता था। इसी क्रम में महासमुंद का तमोरा जंगल में कुछ पशु घुस गए, चौकीदार बिसाहू द्वारा गांव वालों पर जंगल में पशु चराने का दस्तावेज प्रस्तुत करने हेतु दबाव बनाया गया। लिखित दस्तावेज नहीं मिलने पर किसानों एवं मालगुजारों के ऊपर मुकदमा चलाया गया, इसी के विरोध में जंगल सत्याग्रह हुआ। 12 सितंबर 1930 को धारा 144 लगने पर भी 5000 ग्रामीणों का भीड़ एकत्रित हुआ। जिसमें भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित थी। जिसमें 13 साल की बालिका दयावती एवं उनकी मां के साथ 200 महिलाएं थी। सभा स्थल की ओर आगे बढ़ रही भीड़ को पुलिस प्रशासन ने रोकने का प्रयास किया उन पर बेतों से प्रहार किया गया। पुलिस ने स्त्रियों को हटाने का आदेश दिया परंतु महिलाएं अपनी जगह पर डटे रहे। बंदूकधारी सिपाहियों के समक्ष दयावती ने कहा- " हम को मार डालो, पर हम अपनी जगह से नहीं हटेंगे"। इस तरह महिलाएं अपनी जगह पर बैठ गई। मिर्जा बेग ने स्थिति को सुधारने का प्रयास किया, तो दयावती ने जवाब दिया, कि हम दुश्मन की बात सुनना नहीं चाहते। ऐसा कहते उन्होंने सरकारी अधिकारी पर तमाचा जड़ दिया, अतः पुलिस को सभा स्थल से भागना पड़ा।[21]

सविनय अवज्ञा आंदोलन मेरा राधाबाई का योगदान उल्लेखनीय है, 22 अगस्त 1930 को रायपुर रेलवे प्लेटफार्म पर पुलिस द्वारा राधाबाई को धक्का मारकर गिरा दिया गया और गिरफ्तार किया गया। उन्हें जिला कांग्रेस कमेटी ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार का मुख्य

दायित्व सौंपा, विदेशी वस्तुओं की दुकानों एवं शराब बिक्री केंद्रों पर उनके नेतृत्व में पिकेटिंग किया गया। उन्हें कांग्रेस कमेटी ने युद्ध समिति का चौथा डिक्टेटर नियुक्त किया। 28 मई 1932 को नागपुर प्रांतीय परिषद के लिए राधाबाई को भी प्रतिनिधि नामित किया, इनके सम्मान में आनंद समाज वाचनालय से निकला जुलूस में पुलिस द्वारा लाठियां बरसाई गई, जिसके अग्रिम पंक्ति में राधाबाई थी, सभी को कोतवाली के पास गिरफ्तार कर लिया गया। जिसमें फूटेनिया बाई, मनटोरा बाई, मटोलीन बाई, मुटकी बाई, केजा बाई, रामती बा, अमृता बाई एवं कुंवर बाई आदि को पुलिस घसीट कर कोतवाली ले गई। उसके साथ अभद्रता पूर्ण व्यवहार किया, रात में बाहर छोड़ दिया गया। तब धर्मशाला में शरण लेने पर मजबूर हुए, यहां पर भी पुलिस ने उनके साथ बदसलूकी की। अतः 2 अप्रैल 1932 को पुलिस द्वारा सत्याग्रही ऊपर किए गए असभ्य एवं बर्बरता पूर्ण व्यवहार की निंदा करने हेतु राधाबाई के सभापतित्व में एक आम सभा का आयोजन हुआ।[22]

इस दौरान 82 वर्षीय केतकी बाई रोज धरना देती एवं गिरफ्तार होती परंतु उसे छोड़ दिया जाता था, एक बार जेल जाने के लिए अनशन कर बैठी तब उन्हें जेल भेजा गया। उसी प्रकार रोहिणी बाई में 12 वर्ष की उम्र से ही देश भक्ति की जुनून कूट-कूट कर भरी थी, उन्हें कीकाभाई की दुकान से कोतवाली तक पुलिस घसीटते हुए ले गए,उनके ऊपर 4 माह की सजा एवं जुर्माना लगाया गया, उनके सामानों को कुर्क कर दिया गया तथा जेल में उन्हें यातनाएं दी गई परंतु उनका मनोबल नहीं गिरा। वह सेवादल के सेनानायक भी थी जब गांधी जी का छत्तीसगढ़ में द्वितीय आगमन हुआ, तब रोहिणी बाई को उनके साथ महासमुंद, भाटापारा एवं धमतरी जाने का अवसर मिला, उन्हें बापू का "मयारू बेटी" कहने लगे। उन्होंने कासिमपारा के झबकबाड़ा में महिलाओं की सभा में गांधीजी के हरिजन कोष में 11000 की पोटली अपने हाथों में भेंट की।

1930 में आल्हा कार ने लिखा-

बहू बेटियां हमारी कहिए, रणचंडी की ही है अवतार,

खादी आज देश में विपत पड़ी है, तुम सब हो तैयार,

कपड़ा पहनो तुम खादी का, धर चरखा देखो चलाएं,

कत कत सूत देर जो लागे भी विलायत जाए ना पाए।[23]

7. भारत छोड़ो आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाएं-

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान धरना एवं बहिष्कार में खूबचंद बघेल की पत्नी रामकुंवर को बघेल से पहले गिरफ्तार कर लिया गया। मनोहर श्रीवास्तव की मां फुलकुंवर एवं उनकी पत्नी पोचीबाई, शंकरराव गनोदवाले की पत्नी पार्वती बाई, भुजबल सिंह की पत्नी बेलाबाई, माधवराव परगनिहा की पत्नी रोहिणी बाई एवं नंदकुमार दानी की पत्नी अंजनी बाई को गिरफ्तार किया गया। जैतू साव मठ एवं दूधाधारी मठ भूमिगत सेनानियों का प्रमुख केंद्र था। महिलाएं पूजन, व्रत एवं कथा के बहाने एकत्रित होने लगी। भवानी बाई, इंदिरा लाखे, उमा गायकवाड एवं काशीबाई का महिला संगठन था। कृष्णाबाई, सीताबाई, रोहिणी, रामकुंवर का एक संगठन था। कासिम पारा में अंबिका पटेरिया, यशोदाबाई गंगेले, गोमती बाई मारवाड़ी, सुशीलाबाई गुजराती एवं अन्नपूर्णा शुक्ला का एक दल था। रोहिणी बाई के साथ ममादाई एवं भगवती बाई को कुआं बंगोली से गिरफ्तार किया गया। उन्हें 7 माह की कैद की सजा सुनाई गई थी। सिहावा के आदिवासी महिलाओं को गिरफ्तार किया गया।[24]

मिनीमाता एवं करुणा माता का योगदान भी प्रमुख था। खादी एवं स्वदेशी का प्रचार और मद्य निषेध गौवध को रोकने में उनका महत्वपूर्ण भूमिका रहा। पंडरी स्थित उनके निवास सत्याग्रहीयों का प्रमुख केंद्र था। अन्य महिलाओं में रायपुर से नंदलाल वर्मा की पत्नी रामवती, सुंदरदास की पत्नी भवनतीनबाई, शिवलाल की पत्नी गयाबाई, गंगाराम की पत्नी देवमतीबाई राघवराव की पत्नी बंगी बाई, महासमुंद से विश्राम की पत्नी लीला बाई, लल्लू राम की पत्नी इंद्रावती, रामविशाल की पत्नी मोहरी बाई, सिमगा से कृपा राम की पत्नी सोना बाई एवं भाटापारा से इंदल की पत्नी उदया बाई प्रमुख थी। जिन्होंने देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।[25]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के महिलाओं ने वनांचल क्षेत्रों में गांधी जी के आगमन के पहले ही सक्रिय रही परंतु मैदानी क्षेत्र की महिलाएं गांधी युग में बढ़-चढ़कर भाग लिया, अतः आंदोलन में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

संदर्भ सूची :

1. हरिजन 20,30,1937

2. शर्मा, पवित्र कुमार,रानी चेनम्मा, 2011, पृष्ठ 18.
3. चंचरिक, कन्हैया लाल, सन् 1857 की महान राज्यक्रांति और वीरांगना झलकारी बाई, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 62.
4. सरताज,बानो, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 14.
5. वही, पृष्ठ 17.
6. बंधोपाध्याय, शेखर, पलासी से विभाजन तक और उसके बाद, हैदराबाद, 2019 पृष्ठ 313.
7. त्यागी, रस्तोगी ,भारतीय इतिहास में महिलायें, संजीव प्रकाशन, मेरठ 2018, पृष्ठ 159.
8. वही, पृष्ठ 161.
9. फैजिया परवीन, गांधी दर्शन में नारी स्वतंत्रता, सागर 2009, पृष्ठ 105.
10. वही, पृष्ठ 106.
11. त्रिपाठी, संजय, छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ, आगरा 2019, पृष्ठ 307.
12. समग्र छत्तीसगढ़, 2018, पृष्ठ 115.
13. शुक्ल, हीरालाल, आदिवासी बस्तर का वृहद इतिहास, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 120.
14. वही, पृष्ठ 167.
15. देवांगन, शोभाराम, धमतरी नगर एवं तहसील का स्वतंत्रता आंदोलन, पांडुलिपि, पृष्ठ 16.
16. वही, हरिजन, 1937.
17. ठाकुर, हेमवती, छत्तीसगढ़ के धमतरी नगर का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अनुशीलन, रायपुर, पृष्ठ 34.
18. द कलेक्टेड वर्क्स महात्मा गांधी खंड 43, पृष्ठ12.
19. मिश्र, पी.एल., पॉलीटिकल हिस्ट्री ऑफ़ दी सेंट्रल प्रोविंस, पृष्ठ 198.
20. सिंह, ठाकुर प्यारेलाल, रिपोर्ट महाकौशल कांग्रेस कमेटी
21. बेहार, रामकुमार, छत्तीसगढ़ का इतिहास, रायपुर, पृष्ठ 234.
22. पाल, आभा, आर.,पार्टिसिपेशन आफ विमेन इन दि सिविल डिसऑबेडिएंस मूवमेंट ए केस स्टडी ऑफ द सेंट्रल प्रोविंसेस एंड बरार अध्ययन.
23. राजमोहन, विमेन इन इंडियन नेशनल कांग्रेस 1921 - 1932, न्यू दिल्ली, 1999.
24. ठाकुर, एग्नेश, मध्य प्रांत एवं बरार में दलीय राजनीति तथा स्वाधीनता आंदोलन, पृष्ठ 18.
25. रायपुर गजेटियर, 1973.